2 उदयशंकर भट्ट

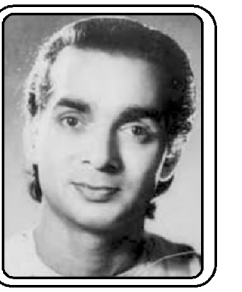

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—3 अगस्त, 1898 ई०।
- **जन्म-स्थान**—इटावा (उ० प्र०)।
- स्वाधीनता-आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका।
- आकाशवाणी में परामर्शदाता, निदेशक, प्रोड्यूसर रहे।
- **मृत्यु**—22 फरवरी, 1966 ई०।

जीवन-परिचय—सुविख्यात साहित्यकार उदयशंकर भट्ट का जन्म 3 अगस्त, सन् 1898 ई० को उत्तर प्रदेश के इटावा नगर स्थित उनके ननिहाल में हुआ था। आपके पूर्वज गुजरात से आकर उत्तर प्रदेश में बस गये थे। आपके नाना का परिवार शिक्षा, भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशेष रुचि प्रदर्शित करता था। नाना के यहाँ बचपन में ही भट्ट जी को संस्कृत भाषा का ज्ञान करा दिया गया था तथा बाद में संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी की शिक्षा आपने अर्जित की। चौदह वर्ष की अवस्था में ही माता-पिता का साया भट्ट जी के सिर से उठ गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त आपने पंजाब से 'शास्त्री' और कलकत्ता (कोलकाता) से 'काव्यतीर्थ' की उपाधि भी प्राप्त की। सन् 1923 ई० में जीविका की खोज में आप लाहौर चले गये और वहाँ एक विद्यालय में हिन्दी और संस्कृत का अध्यापन-कार्य करते रहे।

आपने भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1947 ई० में देश-विभाजन के उपरान्त लाहौर छोड़कर दिल्ली चले आये। यहाँ आप आकाशवाणी में परामर्शदाता एवं निदेशक के रूप में दीर्घकाल तक सेवाएँ अर्पित कीं। नागपुर और जयपुर आकाशवाणी में प्रोड्यूसर के पद पर भी कार्य किया। सेवा-निवृत्त होने के बाद आप स्वतन्त्र रूप से कहानी, उपन्यास, आलोचना और नाटक आदि विधाओं पर लेखनी चलाते रहे। 22 फरवरी, सन् 1966 ई० को यह महान् साहित्यकार गोलोकवासी हो गया।

कृतियाँ—भट्ट जी के प्रमुख एकांकी हैं—समस्या का अन्त, धूमशिखा, वापसी, परदे के पीछे, अभिनव एकांकी, आज का आदमी, आदिम युग, स्त्री का हृदय, अन्त्योदय तथा चार एकांकी। भट्ट जी के प्रथम ऐतिहासिक नाटक 'विक्रमादित्य' में पश्चिमी शैली तथा दूसरी रचना 'दाहर' अथवा 'सिंह पल' में दुःखान्त पद्धति है। 'मुक्तिबोध' और 'शंका विजय' ऐतिहासिक नाटक, 'अम्बा' और 'सागर विजय' पौराणिक नाटक, 'कमला' और 'अन्तहीन अन्त' सामाजिक नाटक हैं तथा 'नया समाज' आधुनिक वर्ग का चित्र प्रस्तुत करनेवाला नाटक है। इसके अतिरिक्त भट्ट जी ने कविता, उपन्यास आदि विधाओं पर भी लिखा है।

साहित्यिक अवदान—बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न भट्ट जी का साहित्यिक जीवन काव्य-रचना से आरम्भ हुआ। सन् 1922 ई० से आपने नाटकों की रचना प्रारम्भ की और आजीवन नाट्य-सृजन में लगे रहे। आपने एकांकी विधा को नयी दिशा प्रदान की। रंगमंच एवं रेडियो-प्रसारण दोनों ही क्षेत्रों में आपके एकांकी सफल सिद्ध हुए हैं। किसी भी समस्या को जीवन्त रूप में प्रस्तुत कर देना भट्ट जी के एकांकियों की सर्वप्रमुख विशेषता है। आपकी नाट्य-कला देश की साहित्यिक प्रगति के साथ-साथ नया मोड़ लेती रही। भट्ट जी के एकांकी पौराणिक, हास्यप्रधान, समस्याप्रधान और सामाजिक विषयों पर आधारित हैं। ♦

नये मेहमान

पात्र-परिचय

विश्वनाथ	:	गृहपति
नन्हेंमल, बाबूलाल	:	अतिथि
प्रमोद, किरण	:	विश्वनाथ के बच्चे
आगन्तुक	:	रेवती का भाई
रेवती	:	विश्वनाथ की पत्नी

स्थान
भारत का कोई बड़ा नगर
समय
गर्मी की रात के आठ बजे

(गर्मी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय। कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे। दक्षिण का द्वार बाहर आने-जाने के लिए। पश्चिम का द्वार भीतर खुलता है। उत्तर की ओर एक मेज है जिस पर कुछ किताबें और अखबार रखे हैं। पास में ही दो कुर्सियाँ रखी हैं। पश्चिम द्वार के पास एक पलँग बिछा है। मेज पर रखा हुआ पुराना पंखा चल रहा है, जिससे बहुत कम हवा आ रही है। कमरा बेहद गरम है। मकान एक साधारण गृहस्थ का है। पलँग के पास चार-पाँच साल का एक बच्चा सो रहा है। पंखे की हवा केवल उस बच्चे को लग रही है। फिर भी वह पसीने से तर है। इसलिए वह कभी-कभी बेचैन हो उठता है, फिर सो जाता है।

कुरता-धोती पहने एक व्यक्ति प्रवेश करता है। पसीने से उसके कपड़े तर हैं। कुरता उतारकर वह खूँटी पर टाँग देता है और हाथ के पंखे से बच्चे को हवा करता है। उसका नाम विश्वनाथ है। उम्र 45 वर्ष, गठा हुआ शरीर, गेहुँआ रंग, मुख पर गम्भीरता तथा सुसंस्कृति के चिह्न।)

विश्वनाथ : ओफ, बड़ी गरमी है। (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बन्द मकानों में रहना कितना भयंकर है! मकान है कि भट्ठी!

(पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है)

रेवती : (आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बन्द हो जायगी। सिर फटा जा रहा है।

(सिर दबाती है)

विश्वनाथ : पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है, और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती। अभी चार गिलास पानी पीकर आया हूँ, फिर भी होंठ सूख रहे हैं। एक गिलास पानी और पिला दो। ठण्डा तो क्या होगा।

रेवती : गरम है। आँगन में घड़े में भी तो पानी ठण्डा नहीं होता, हवा लगे, तब तो ठण्डा हो। जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा।

विश्वनाथ : मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ। हाँ, पानी तो ले आओ, जरा गला ही तर कर लूँ।

रेवती : बरफ ले आते। पर मरी बरफ भी कोई कहाँ तक पिये।

विश्वनाथ : बरफ! बरफ का पानी पीने से क्या फायदा। प्यास जैसी-की-तैसी, बल्कि दुगुनी लगती है। ओफ! पंखा ले लो। बच्चे क्या ऊपर हैं?

रेवती : रहने दो, तुम्हीं करो। छत इतनी छोटी है कि पूरी खाट भी तो नहीं आती। एक खाट पर दो-दो, तीन-तीन बच्चे सोते हैं, तब भी पूरा नहीं पड़ता।

विश्वनाथ : एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी, बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देते।

रेवती : वे तो हमको मुसीबत में देखकर प्रसन्न होते हैं। उस दिन मैंने कहा तो लाला की औरत बोली क्या छत तुम्हारे लिये है? नकद पचास देते हैं, तब चार खाटों की जगह मिली है। न बाबा, यह नहीं हो सकेगा। मैं खाट नहीं बिछाने दूँगी। सब हवा रुक जायगी। और किसी को सोता देखकर नींद नहीं आती।

विश्वनाथ : पर बच्चों के सोने में क्या हर्ज है? जरा आराम से सो सकेंगे। कहो तो मैं कहूँ?

रेवती : क्या फायदा? अगर लाला मान भी ले तो वह दुष्टा नहीं मानेगी। वैसे भी मैं उसकी छत पर बच्चों को अकेला सोना पसन्द नहीं करूँगी। बड़ी डायन औरत है। उसके तो बाल-बच्चे हैं नहीं, कुछ कर दे तब?

विश्वनाथ : फिर जाने दो। मैं नीचे आँगन में सो जाया करूँगा। कमरे में भला क्या सोया जायगा? मैं कभी-कभी सोचता हूँ यदि कोई अतिथि आ जाय तो क्या होगा?

रेवती : ईश्वर करे इन दिनों कोई मेहमान न आये। मैं तो वैसे ही गर्मी के मारे मर रही हूँ, पिछले पन्द्रह दिन से दर्द के मारे सिर फट रहा है। मैं ही जानती हूँ कैसे रोटी बनाती हूँ।

विश्वनाथ : सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो। यहाँ की गरमी से ईश्वर बचाये। इसीलिए यहाँ गर्मियों में सभी सम्पन्न लोग पहाड़ों पर चले जाते हैं।

रेवती : चले जाते होंगे। गरीबों की तो मौत है।

(रेवती जाती है। बच्चा गर्मी से घबरा उठता है। विश्वनाथ जोर-जोर से पंखा करता है।)

विश्वनाथ : इन सुकुमार बालकों का क्या अपराध है? इन्होंने क्या बिगाड़ा है? तमाम शरीर मारे गर्मी के उबल रहा है।

(रेवती पानी का गिलास लेकर आती है।)

रेवती : बड़े का तो अभी बुरा हाल है। अब भी कभी-कभी देह गर्म हो जाती है।

विश्वनाथ : (पानी पीकर) उसने क्या कम बीमारी भोगी है—पूरे तीन महीने तो पड़ा रहा है। वह तो कहो मैंने उसे शिमला भेज दिया, नहीं तो न जाने·····

रेवती : भगवान् ने रक्षा की। देखा नहीं, सामनेवालों की लड़की को फिर से टाइफाइड हो गया और वह चल बसी। तुम कुछ दिनों की छुट्टी क्यों नहीं ले लेते। मुझे डर है, कहीं कोई बीमार न पड़ जाय।

विश्वनाथ : छुट्टी कोई दे तब न! छुट्टी ले भी लूँ तो खर्च चाहिए। खैर, तुम आज जाकर ऊपर सो जाओ। मैं आँगन में खाट डालकर पड़ा रहूँगा। बच्चे को ले जाओ, वह गर्मी में भुन रहा है।

रेवती : यह नहीं हो सकता। मैं नीचे सो जाऊँगी। तुम ऊपर छत पर जाकर सो जाओ और ऊपर भी क्या हवा है। चारों तरफ दीवारें तप रही हैं। तुम्हीं जाओ ऊपर।

विश्वनाथ : यही तो तुम्हारी बुरी आदत है। किसी का कहना न मानोगी, बस अपनी ही हाँके जाओगी। पन्द्रह दिन से सिर में दर्द हो रहा है। मैं कहता हूँ खुली हवा में सो जाओगी तो तबीयत ठीक हो जायगी।

रेवती : तुम तो व्यर्थ की जिद करते हो। भला यहाँ आँगन में तुम्हें नींद आयेगी? बन्द मकान, हवा का नाम नहीं। रात भर नींद न आयेगी। सवेरे काम पर जाना है। जाओ, मेरा क्या है, पड़ी रहूँगी।

विश्वनाथ : नहीं, यह नहीं हो सकता। आज तो तुम्हें ऊपर सोना पड़ेगा। वैसे भी मुझे कुछ काम करना है।

रेवती : ऐसी गर्मी में क्या काम करोगे? तुम्हें भी न जाने क्या धुन सवार हो जाती है। जाओ सो जाओ। मैं आँगन में खाट पर इसे लेकर जैसे-तैसे रात काट लूँगी, जाओ।

विश्वनाथ : अच्छा तुम जानो। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा था। मैं ही ऊपर जाता हूँ।

(बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है।)

रेवती : कौन होगा?

विश्वनाथ : न जाने! देखता हूँ।

रेवती : हे भगवान्! कोई मुसीबत न आये।

(बच्चे को पंखा करती है। बच्चा गर्मी से उठ बैठता है और पानी माँगता है। वह बच्चे को पानी पिलाती है, पंखा करती है। इसी समय दो व्यक्तियों के साथ विश्वनाथ प्रवेश करता है। रेवती बच्चे को लेकर आँगन में चली जाती है। आगन्तुक एक साधारण बिस्तर तथा एक सन्दूक लेकर कमरे में प्रवेश करते हैं। विश्वनाथ भी पीछे-पीछे आता है। कमीजों के ऊपर काली बण्डी, सिर पर सफेद पगड़ियाँ। बड़े की अवस्था पैंतीस और छोटे की चौबीस है। रंग साँवला, बड़े की मूँछें मुँह को घेरे हुए। माथे पर सलवट। छोटे की अधकटी मूँछें, लम्बा मुख और बड़े-बड़े दाँत। दोनों मैली धोतियाँ पहने हैं। बड़े का नाम नन्हेंमल और छोटे का बाबूलाल है। इस हबड़-धबड़ में दोनों बच्चे ऊपर से उतरकर आते हैं और दरवाजे के पास खड़े होकर आगन्तुकों को देखते हैं।)

विश्वनाथ : (बड़े लड़के से) प्रमोद, जरा कुर्सी इधर खिसका दो। (दूसरे अतिथि से) आप इधर खाट पर आ जाइये। जरा पंखा तेज कर देना, किरण। (किरण पंखा तेज करती है, किन्तु पंखा वैसे ही चलता है।)

नन्हेंमल : (पगड़ी के पल्ले से मुँह का पसीना पोंछकर उसी से हवा करता हुआ।) बड़ी गर्मी है। क्या कहें पण्डित जी, पैदल चले आ रहे हैं, कपड़े तो ऐसे हो गये कि निचोड़ लो।

विश्वनाथ : जी, आप लोग……

बाबूलाल : चाचा, मेरे कपड़े निचोड़कर देख लो। एक लोटे से कम पसीना नहीं निकलेगा। धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो। पिछले दिनों नकद नौ रुपये खर्च करके खरीदी थी।

नन्हेंमल : मोतीराम की दुकान से ली होगी। बड़ा मक्कार है। मैंने भी कुरतों के लिए छह गज मलमल मोल ली थी, सवा रुपया गज दी, जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी। पण्डित जी, गला सूखा जा रहा है। स्टेशन पर पानी भी नहीं मिला, मन करता है लेमन की पाँच-छह बोतलें पी जाऊँ।

बाबूलाल : मुझे कोई पिलाकर देखे, दस से कम नहीं पीऊँगा। (बच्चों की ओर देखकर क्या नाम है तुम्हारा भाई?

प्रमोद : प्रमोद।

किरण : किरण।

बाबूलाल : ठण्डा-ठण्डा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।

विश्वनाथ : देखो प्रमोद, कहीं से बर्फ मिले तो ले आओ, आप लोग……

नन्हेंमल : अपना लोटा कहाँ रखा है? थैले में ही है न?

बाबूलाल : बिस्तर में होगा चाचा, निकालूँ क्या? और तो और, बिस्तर भी पसीने से भीग गया, चाचा मैं तो पहले नहाऊँगा, फिर जो होगा देखा जायगा, हाँ नहीं तो। मुझे नहीं मालूम था यहाँ इतनी गर्मी है।

नन्हेंमल : देखते जाओ। हाँ, साहब!

विश्वनाथ : क्षमा कीजिएगा आप कहाँ से पधारे हैं?

नन्हेंमल : अरे, आप नहीं जानते। वह लाल सम्पतराम हैं न गोटेवाले, वह मेरे चचेरे भाई हैं। क्या बतायें साहब, उन बेचारों का कारोबार सब चौपट हो गया, हम लोगों के देखते-देखते वह लाखों के आदमी खाक में मिल गये। बाबू, यह लो मेरी बण्डी सन्दूक में रख दो।

विश्वनाथ : कौन सम्पतराम?

बाबूलाल : अरे वही गोटेवाले। लाओ न, चाचा, (सन्दूक खोलकर बण्डी रखते हुए) माल-मसाला तो अण्टी में है न?

नन्हेंमल : नहीं! जेब में है। बण्डी की जेब में है। अब डर की क्या बात है! घर ही तो है। जरा बीड़ी का बण्डल तो मेरी जेब से निकाल।

बाबूलाल : बीड़ी तो मेरे पास भी है, लो जरा भाई, दियासलाई ले आना।

किरण : अभी लाया।

(जाता है और लौटकर दियासलाई देता है। दोनों बीड़ी पीते हैं।)

विश्वनाथ : मैं सम्पतराम को नहीं जानता।

नन्हेंमल : मैं सम्पतराम को जानने की·····क्यों, वह तो आपसे मिले हैं। आपको तो वह·····

बाबूलाल : हाँ, उन्होंने कई बार मुझसे कहा है। आपकी तो वह बहुत तारीफ करते हैं। पण्डित जी, क्या मकान इतना ही बड़ा है?

नन्हेंमल : देख नहीं रहे, इसके पीछे एक कमरा दिखायी देता है। पण्डित जी, इसके पीछे आँगन होगा और ऊपर छत होगी? शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।

किरण : (विश्वनाथ से) माँ पूछती है खाना·····

नन्हेंमल : क्यों बाबूलाल? पण्डित जी, कष्ट तो होगा, पर तुम जानो, खाना तो·····

बाबूलाल : बस एक साग और पूरी।

नन्हेंमल : वैसे तो मैं पराँठे भी खा लेता हूँ।

बाबूलाल : अरे खाने की भली चलायी, पेट ही भरना है। शहर में आये हैं, तो किसी को तकलीफ थोड़े ही देंगे। देखिये पण्डित जी, जिसमें आपको आराम हो, हम तो रोटी भी खा लेंगे। कल फिर देखी जायगी।

नन्हेंमल : भूख कब तक नहीं लगेगी·····सारा दिन तो गया।

बाबूलाल : नहाने का प्रबन्ध तो होगा, पण्डित जी?

(प्रमोद बर्फ का पानी लाता है)

नन्हेंमल : हाँ भैया, ला तो जरा, डेढ़ लोटा पानी पीऊँगा।

बाबूलाल : उतनी ही मैं भी।

(दोनों गट-गट पानी पीते हैं।)

किरण : (विश्वनाथ से धीरे से) फिर खाना·····

विश्वनाथ : (इशारे से) ठहर जा जरा।

नन्हेंमल : (पानी पीकर) आह, अब जान में जान आयी। सचमुच गर्मी में पानी ही तो जान है।

बाबूलाल : पानी भी खूब ठण्डा है। वाह भैया, खुश रहो।

नन्हेंमल : कितने सीधे लड़के हैं।

बाबूलाल : शहर के हैं न।

विश्वनाथ : क्षमा कीजिए, मैंने आपकी·····

दोनों : अरे पण्डित जी, आप कैसी बातें करते हैं? हम तो आपके पास के हैं।

विश्वनाथ : आप कहाँ से आये हैं?

नन्हेंमल : बिजनौर से।

विश्वनाथ : (आश्चर्य से) बिजनौर से। बिजनौर मैं तो……मैं गया हूँ, किन्तु……

नन्हेंमल : मैं जरा नहाना चाहता हूँ।

बाबूलाल : मैं भी स्नान करूँगा।

विश्वनाथ : पानी तो नल में शायद ही हो, फिर भी देख लो। प्रमोद, इन्हें नीचे नल पर ले जाओ।

बाबूलाल : तब तक खाना भी तैयार हो जायगा।

(दोनों बाहर निकल आते हैं। रेवती का प्रवेश)

रेवती : ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्वनाथ : क्या पूछूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।

रेवती : मेरा तो दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है। इधर पिछली शिकायत फिर से बढ़ती जा रही है। पहले सोते-सोते हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे, अब बैठे-बैठे हो जाते हैं।

विश्वनाथ : क्या बताऊँ, जीवन में तुम्हें कोई सुख न दे सका। नौकर भी नहीं टिकता है।

रेवती : पानी जो तीन मंजिल पर चढ़ाना पड़ता है, इसलिए भाग जाता है। गर्मी क्या कम है। किसी को क्या जरूरत पड़ी है जो गर्मी में भुने। यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते हैं।

विश्वनाथ : क्या किया जाय?

रेवती : फिर क्या खाना बनाना होगा? पर ये हैं कौन?

विश्वनाथ : खाना तो बनाना ही पड़ेगा। कोई भी हों जब आये हैं तो जरूर खाना खायेंगे। थोड़ा-सा बना लो।

रेवती : (तुनककर) खाना तो खिलाना ही होगा–तुम भी खूब हो। भला, इस तरह कैसे काम चलेगा? दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना इनके लिए इस समय? आखिर ये आये कहाँ से हैं?

विश्वनाथ : कहते हैं बिजनौर से आये हैं।

रेवती : (आश्चर्य से) बिजनौर! क्या बिजनौर में तुम्हारी जान-पहचान है? अपनी बिरादरी का तो कोई आदमी वहाँ रहता नहीं है।

विश्वनाथ : बहुत दिन हुए एक बार काम से बिजनौर गया था, पर तब से अब तो बीस साल हो गये हैं।

रेवती : सोच लो, शायद वहाँ कोई साहित्यिक मित्र हो, उसी ने इन्हें भेजा हो।

विश्वनाथ : ध्यान तो नहीं आता, फिर भी कदाचित् कोई मुझे जानता हो और उसी ने भेजा हो। किसी सम्पतराम का नाम बता रहे थे, मैं जानता भी नहीं।

रेवती : बड़ी मुश्किल है। मैं खाना नहीं बनाऊँगी। पहले आत्मा फिर परमात्मा, जब शरीर ही ठीक नहीं रहता तो फिर और क्या करूँ?

विश्वनाथ : क्या कहेंगे कि रातभर भूखा मारा, बाजार से कुछ मँगा दो न!

रेवती : बाजार से क्या मुफ्त में आ जायगा! तीन-चार रुपये से कम में क्या उनका पेट भरेगा। पहले, तुम पूछ लो, मैं बाद में खाना बनाऊँगी।

(बाबूलाल का प्रवेश। रेवती का दूसरी ओर से जाना)

बाबूलाल : तबीयत अब शान्त हुई, फिर भी पसीने से नहा गया हूँ, न जाने पण्डित जी आप कैसे रहते हैं। (पंखा करता है)

विश्वनाथ : आठ-नौ लाख आदमी इस शहर में रहते हैं और उनमें से छह-सात लाख आदमी इसी तरह के मकानों में रहते हैं।

(ऊपर छत पर शोर मचता है)

प्रमोद : (आकर) उन्होंने दूसरी छत पर हाथ धो लिये, पानी फैल गया, इसीलिए वह पड़ोस की स्त्री चिल्ला रही है, मैंने कहा, सवेरे साफ कर देंगे, इन्हें मालूम नहीं था।

विश्वनाथ : तुमने क्यों नहीं बताया कि हाथ दूसरी जगह धोओ।

प्रमोद : मैं पानी पीने चला गया था। वहाँ उषा रोने लगी। उसे चुप कराया, पानी पिलाया और पंखा करता रहा।

विश्वनाथ : चलो कोई बात नहीं, उनसे कह दो कि सवेरे साफ करा देंगे।

(नेपथ्य में—"अरे बाबू, मेरी धोती दे देना। मैं भी नहा लूँ।")

बाबूलाल : लाया चाचा। (जाता है)

(पड़ोसी का तेजी से प्रवेश)

पड़ोसी : देखिए साहब मेहमान आपके होंगे मेरे नहीं। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी छत पर इस तरह गन्दा पानी फैलाया जाय।

विश्वनाथ : वाकई गलती हो गयी, कल सवेरे साफ कर दूँगा।

पड़ोसी : आपसे रोज ही गलती हो जाती है।

विश्वनाथ : अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी : होगा क्यों नहीं, रोज होगा। रोज होता है। अभी उसी दिन आपके एक और मेहमान ने पानी फैला दिया था। फिर वह खाट बिछाकर लेट गया था।

विश्वनाथ : मैंने समझा तो दिया था। फिर तो वह आदमी खाट पर नहीं लेटा था।

पड़ोसी : तो आपके यहाँ इतने मेहमान आते ही क्यों हैं? यदि मेहमान बुलाने हों, तो बड़ा-सा मकान लो।

विश्वनाथ : यह भी आपने खूब कहा कि इतने मेहमान क्यों आते हैं। अरे भाई, मेहमानों को क्या मैं बुलाता हूँ? खैर, आज क्षमा करें, अब आगे ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी : कहाँ तक कोई क्षमा करे। क्षमा, क्षमा! बस एक ही बात याद कर ली—क्षमा!

(चला जाता है। दोनों अतिथि आते हैं।)

दोनों : क्या बात है?

विश्वनाथ : कुछ नहीं, आप धोतियाँ छज्जे पर सुखा दें।

नन्हेंमल : ले बाबू, डाल तो दे, और ला, बीड़ी निकाल।

बाबूलाल : मेरी जेब से ले लो। (धोतियाँ लेकर चला जाता है)

नन्हेंमल : सचमुच हमारी वजह से आपको बड़ा कष्ट हुआ। (बैठकर बीड़ी सुलगाता है) भैया, जरा-सा पानी और पिला। उफ्फ, बड़ी गर्मी है। हाँ साहब, खाने में क्या देर-दार है? बात यह है कि नींद बड़े जोर से आ रही है।

विश्वनाथ : देखिए! मैं आपसे एक-दो बात पूछना चाहता हूँ।

नन्हेंमल : हाँ, हाँ पूछिए, मालूम होता है आपने हमें पहचाना नहीं।

(बाबूलाल आता है)

विश्वनाथ : जी हाँ, बात यह है कि मैं बिजनौर गया तो अवश्य हूँ, पर बहुत दिन हो गये।

नन्हेंमल : तो क्या हर्ज है कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है। हम तो आपको जानते हैं। कई बार आपको देखा भी है।

बाबूलाल : लाल भानामल की लड़की की शादी में आप नजीबाबाद गये थे।

नन्हेंमल : अरे दूर क्यों जाते हो। अभी पिछले साल आप नजीबाबाद गये थे।

विश्वनाथ : हाँ, पिछले साल मैं लखनऊ जाते हुए दो दिन के लिए जगदीशप्रसाद के पास मुरादाबाद ठहरा था।

नन्हेंमल : हाँ, सेठ जगदीशप्रसाद के यहाँ हमने आपको देखा था।

बाबूलाल : उनकी आटे की मिल है, क्या कहने हैं उनके—बड़े आदमी हैं। हम उन्हीं के रिश्तेदार हैं।

विश्वनाथ : पर उनका तो प्रेस है।

नन्हेंमल : प्रेस भी होगा। उनकी एक बड़ी मिल भी है। अब एक और गन्ने की मिल बिजनौर में खुल रही है।

बाबूलाल : अगले महीने खुल जायगी। हाँ भैया, पानी ले आये, लो चाचा, पहले तुम पी लो।

विश्वनाथ : तो आप कोई चिट्ठी-विट्ठी तो नहीं लाये हैं।

दोनों : (सकपकाकर) चिट्ठी-विट्ठी तो नहीं लाये हैं।

नन्हेंमल : सम्पतराम ने कहा था कि स्टेशन से उतरकर सीधे रेलवे रोड चले जाना। वहाँ कृष्ण गली में वे रहते हैं।

विश्वनाथ : पर कृष्ण गली तो यहाँ छह हैं। कौन-सी गली में बताया था?

नन्हेंमल : छह हैं! बहुत बड़ा शहर है साहब! हमें तो यह मालूम नहीं है, शायद बताया हो। याद नहीं रहा।

विश्वनाथ : (खीझकर) जिसके यहाँ आपको जाना है, उसका नाम तो बताया होगा?

बाबूलाल : क्या नाम था चाचा?

नन्हेंमल : नाम तो याद नहीं आता। जरा ठहरिये, सोच लूँ।

बाबूलाल : अरे, चाचा, कविराज या कवि बताया था। मैं उस समय नहीं था। सामान लेने घर गया था। तुम्हीं ने रेल में बताया था।

नन्हेंमल : हाँ साहब, कविराज बताया था। आप तो बेकार में शक में पड़े हैं, हम कोई चोर थोड़े ही हैं।

बाबूलाल : चोर छिपे थोड़े ही रहते हैं। पण्डित जी, क्या बतायें हमारे घर चलकर देख लें, तो पता लगेगा कि हम भी .....

नन्हेंमल : चुप, एक बीड़ी और निकाल, बाबू।

बाबूलाल : यह लो।

विश्वनाथ : लेकिन मैं कविराज तो नहीं हूँ?

दोनों : (चिल्लाकर) तो कवि ही बताया होगा, साहब।

नन्हेंमल : हमें याद नहीं आ रहा। हमें तो जो पता दिया था उसी के सहारे आ गये। नीचे आवाज लगायी और आप मिल गये, ऊपर चढ़ आये। पहले हमने सोचा होटल या धर्मशाला में ठहर जायँ। फिर सोचा, घर के ही तो हैं। चलो, घर चलें।

विश्वनाथ : जिनके यहाँ आपको जाना था, वह काम क्या करते हैं?

नन्हेंमल : काम? क्या काम बताया था, बाबू?

बाबूलाल : मेरे सामने तो कोई बात नहीं हुई। मैं तो सामान लेने चला गया था। आप तो पण्डित जी, शायद वैद्य हैं।

नन्हेंमल : हाँ याद आया। बताया था वैद्य हैं।

विश्वनाथ : पर मैं तो वैद्य नहीं हूँ।

प्रमोद : पिछली गली में एक कविराज वैद्य रहते हैं।

विश्वनाथ : हाँ, हाँ, ठीक, कहीं आप कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ तो नहीं आये हैं?

दोनों : (उठकर) अरे हाँ, वही तो कविराज रामलाल।

विश्वनाथ : शायद वह उधर के हैं भी।

नन्हेंमल : ठीक है, साहब, ठीक है। वही हैं। मैं भी सोच रहा था कि आप न सम्पतराम को जानते हैं, न जगदीशप्रसाद को–(प्रमोद से) कहाँ है उन कविराज का घर?

विश्वनाथ : जाओ, इन्हें उनका मकान बता दो। मैं भीतर हो आऊँ।

दोनों : चलो, जल्दी चलो भैया, अच्छा साहब, राम-राम।

विश्वनाथ : (भीतर से ही) राम-राम।

रेवती : अब जान में जान आयी। हाय, सिर फटा जा रहा है।

(नीचे से आवाज आती है)

(नेपथ्य) में) भले आदमी, जाने कहाँ मकान लिया है ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आधी रात हो गयी।

रेवती : फिर, फिर अरे (प्रसन्न होकर), अरे भैया हैं। आओ, तुमने तो खबर भी न दी।

आगन्तुक : रेवती! (दोनों मिलते हैं) (विश्वनाथ से) पिछले चार घण्टे से बराबर मकान खोज रहा हूँ। क्या मेरा तार नहीं मिला?

विश्वनाथ : नहीं तो, कब तार दिया?

आगन्तुक : कल ही तो, झाँसी से दिया था। सोचता था कि ठीक समय पर मिल जायगा। ओह, बड़ी परेशानी हुई।

रेवती : लो कपड़े उतार डालो। पंखा करती हूँ। अरे प्रमोद, जा जल्दी से बर्फ तो ला। मामा जी को ठण्डा पानी पिला और देख, नुक्कड़ पर हलवाई की दुकान खुली हो तो·····

आगन्तुक : भाई बहुत बड़ा शहर है। वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा, नहीं तो न जाने कहीं होटल या धर्मशाला में रहना पड़ता। बड़ी गर्मी है। मैं जरा नहाना चाहता हूँ।

विश्वनाथ : हाँ, हाँ, अवश्य। सामने चले जाइये।

आगन्तुक : एक बार तो जी में आया कि सामने होटल में ठहर जाऊँ। शायद रात को आप लोगों को कष्ट हो।

रेवती : ऐसा क्यों सोचते हो। कष्ट काहे का। यह तो हम लोगों का कर्त्तव्य था। अच्छा, तुम तैयार होओ, मैं खाना बनाती हूँ।

आगन्तुक : भई देखो, इस समय खाना-वाना रहने दो। मैं पानी पीकर सो जाऊँगा। वैसे मुझे भूख भी नहीं है।

रेवती : (जाती हुई लौटकर) कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ।

आगन्तुक : इतनी गर्मी में! रहने दो न।

विश्वनाथ : तुम नहाने तो जाओ। (आगन्तुक जाता है) (रेवती से) कहो, अब?

रेवती : अब क्या–मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।

(यवनिका)

अभ्यास प्रश्न

● समीक्षात्मक प्रश्न

1. 'नये मेहमान' एकांकी का सारांश लिखिए।

अथवा

उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित एकांकी की कथावस्तु या कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

2. 'नये मेहमान' एकांकी के प्रमुख पात्र विश्वनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. 'नये मेहमान' एकांकी के आधार पर रेवती का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. नन्हेंमल और बाबूलाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5. कथा-संगठन के विकास को दृष्टिगत रखते हुए 'नये मेहमान' एकांकी की विशेषताएँ लिखिए।

6. 'नन्हेंमल और बाबूलाल अपनी वाचालता के दम पर अपना उल्लू सीधा करने की सामर्थ्य रखते हैं।' 'नये मेहमान' एकांकी के आधार पर सिद्ध कीजिए।
7. उदयशंकर भट्ट के जीवन और कृतियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'नये मेहमान' एकांकीकार के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
2. 'नये मेहमान' वास्तव में कौन हैं? सप्रमाण एवं सतर्क उत्तर दीजिए।
3. यह एकांकी हास्यप्रधान है या समस्याप्रधान, प्रमुख कारणों सहित उत्तर दीजिए।
4. पराये मेहमान और अपने मेहमान के लिए रेवती के भावों का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. 'नये मेहमान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
6. विश्वनाथ मेहमानों के आगमन से क्यों प्रसन्न नहीं था?
7. विश्वनाथ मेहमानों से स्पष्ट परिचय पूछने से क्यों हिचकता था?
8. बड़े नगरों में विश्वनाथ-जैसी स्थिति के लोगों के जीवन पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
9. कल्पना कीजिए कि नन्हेंमल और बाबूलाल आपके घर पधारते हैं तो उनके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? अपने शब्दों में लिखिए।
10. 'नये मेहमान' एकांकी के दस सुन्दर वाक्य लिखिए।

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का चिह्न लगाइये–

1. **नन्हेंमल और बाबूलाल विश्वनाथ के घर गये थे, क्योंकि–**
   (अ) वे ठग थे और रात को चोरी करना चाहते थे। ( )
   (ब) वे रात बिताना चाहते थे। ( )
   (स) गन्तव्य स्थान का नाम-पता भूल गये थे। ( )
2. **नन्हेंमल और बाबूलाल को पहचानने से विश्वनाथ ने इन्कार नहीं किया, क्योंकि–**
   (अ) उसे उन पर दया आ गयी। ( )
   (ब) उसे डर था कि दोनों नाराज हो जायँगे। ( )
   (द) उसे सन्देह था कि ये दोनों सचमुच ही उसके किसी सम्बन्धी द्वारा भेजे गये हैं। ( )
3. **विश्वनाथ के पड़ोसी उससे नाराज रहते थे, क्योंकि–**
   (अ) वे स्वभाव से ही दुष्ट थे। ( )
   (ब) उनके घर मेहमान नहीं आते थे। ( )
   (स) मेहमान आने से उन्हें असुविधा होती थी। ( )
4. **रेवती दूसरे आगन्तुक के लिए खाना तुरन्त बनाती है, क्योंकि–**
   (अ) उससे कुछ लाभ मिलना था। ( )
   (ब) वह रेवती का भाई था। ( )
   (स) विश्वनाथ ने स्पष्ट निर्देश दिया था। ( )
5. **रेवती मेहमानों के लिए खाना नहीं बनाना चाहती थी, क्योंकि–**
   (अ) सचमुच उसे सिर-दर्द था। ( )
   (ब) देर रात खाना बनाना सम्भव नहीं था। ( )
   (स) मेहमानों से उसे आत्मीयता नहीं थी। ( )

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. विश्वनाथ के स्थान पर आप होते तो कैसा अनुभव करते? अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।
2. एकांकी और नाटक में क्या अन्तर है? स्पष्ट कीजिए।